प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए
सत्र 10: सबमिशन (5 बी)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: छंद चरण: **इफिसियों 1:22-23**
22 और उसने सब कुछ अपने पैरों के नीचे रख दिया
और उसे कलीसिया के लिए सब चीजों का मुखिया दे दिया,
23 जो उसका शरीर है, और उस की परिपूर्णता है जो सब में सब को भर देता है।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के सभी या कुछ हिस्सों को पढ़ें और चर्चा करें* **– इफिसियों 1**

चरण 4: व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक. क्या शिष्यों के रूप में हमारे पास वही अधिकार है जो प्रेरितों और पौलुस ने प्रारंभिक चर्च में किया था? क्यों? हमें अधिकार कौन देता है?

दो. क्या परमेश्वर के प्रति हमारा रवैया परमेश्वर के प्रति हमारे रवैये पर विचार करने का अधिकार देता है?

तीन. क्या आप इस बात से सहमत हो सकते हैं कि हमारा अधिकार केवल उसी के कारण महान है जिसके कारण हम प्रतिनिधित्व करते हैं।

चार. क्या आप फिलिप्स से सहमत हैं जो लिखते हैं कि "हम पर अधिकार रखने वालों के अधीन होने की अनिच्छा गंभीर परिणामों के साथ एक बड़ा पाप है"।

पाँच. यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि एक मंत्रालय के रूप में BiblicalMentoring.org एक गवर्निंग बोर्ड के अधिकार के तहत काम करता है।

चरण 5: *पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय 5 बी लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

मसीह आज प्रत्यायोजित अधिकार के माध्यम से शासन करता है

यीशु ने घोषणा की, "... स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" इस आधार पर उसने अपने शिष्यों को "जाओ ... और सभी राष्ट्रों के लोगों को चेला बनाओ..." इस आदेश में निहित था कि उसके शिष्यों में उसके चर्च का निर्माण और विनियमन करने के लिए उसके अधिकार का निवेश किया गया था, क्योंकि उसने इसे "पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से" करने के लिए कहा था (मत्ती 28:18,19)। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मुझे भेजनेवाले को ग्रहण करता है" (मत्ती 10:40)। यहाँ अधिकार की श्रृंखला थी: मसीह ने पिता का प्रतिनिधित्व किया; प्रेरितों ने मसीह का प्रतिनिधित्व किया। एक प्रेरित को प्राप्त करने के लिए पिता को प्राप्त करना था (यूहन्ना 13:20); एक प्रेरित को अस्वीकार करना मसीह और पिता को अस्वीकार करना था। प्रेरित पौलुस ने अक्सर अपने परमेश्वर प्रदत्त अधिकार का उल्लेख किया: "क्योंकि यदि मैं अपने अधिकार के विषय में कुछ और घमण्ड करूं, जो प्रभु ने तुम्हें बनाने के लिए दिया है, न कि तुम्हें नष्ट करने के लिए, तो मैं लज्जित न होऊंगा" (2 कुरिन्थियों 10:8)। और अक्सर पौलुस अपने अधिकार का प्रयोग करता था: "हे भाइयो, अब हम तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं..." (2 थिस्सलुनीकियों 3:6)। पहले शिष्यों ने मसीह से प्राप्त अधिकार को उन लोगों को सौंप दिया जिन्हें उन्होंने प्रशिक्षित किया था। मसीह के अधिकार के साथ उन्होंने चर्च के अगुवों को नियुक्त किया (प्रेरितों के काम 6:3,6; 14:23) और उन्हें दूसरों को निर्देश देने के लिए नियुक्त किया, जो बदले में दूसरों को सिखाते थे (2 तीमुथियुस 2:2)। पौलुस ने तीतुस को अपना अधिकार सौंपा (तीतुस 1:5) और उसे निर्देश

दिया कि "वहां के ईसाइयों से जितना आवश्यक हो उतना सख्ती से बात करें ताकि उन्हें विश्वास में मजबूत बनाया जा सके ..." " (तीतुस 1:13 पौंड) और उन्हें सही करने के लिए "एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसे ऐसा करने का पूरा अधिकार है ..." (तीतुस 2:15 पौंड)। पौलुस ने मसीहियों से अपेक्षा की थी कि वे उसके दो शिष्यों के अधिकार के अधीन हों जैसे वे स्वयं मसीह के प्रति करते थे: "कृपया उनके निर्देशों का पालन करें और उनकी सहायता करने के लिए हर संभव प्रयास करें और साथ ही उन सभी अन्य लोगों की भी सहायता करें जो इस तरह की वास्तविक भक्ति के साथ आपके पक्ष में कड़ी मेहनत करते हैं" (1 कुरिन्थियों 16:16 पौंड, इटैलिक जोड़ा गया)। नए नियम के चर्च में, दूसरी और तीसरी पीढ़ी के शिष्यों ने स्वतंत्र रूप से अधिकार का प्रयोग किया। चूंकि सभी अधिकार परमेश्वर से आते हैं (रोमियों 13:1-5) और वह उन लोगों को अधिकार देता है जिन्हें वह चुनता है (इफिसियों 4:11,12), उन लोगों के प्रति हमारा दृष्टिकोण जिन्हें वह अधिकार सौंपता है, परमेश्वर के प्रति हमारे वास्तविक दृष्टिकोण को दर्शाता है। जब भी उसका प्रत्यायोजित अधिकार हमारे जीवन को छूता है, तो मसीह हमसे अपेक्षा करता है कि हम इसे स्वीकार करें और खुशी-खुशी इसे स्वीकार करें जैसे हम स्वयं मसीह के प्रति करते हैं। हमारा समर्पण परमेश्वर में हमारे भरोसे की घोषणा है।

आप समर्पण के माध्यम से अधिकार प्राप्त करते हैं

एक व्यक्ति जिस अधिकार का प्रयोग करता है, वह उस अधिकार से निर्धारित होता है जिसके प्रति वह समर्पण करता है। रोमन सूबेदार जानता था कि यदि मसीह एक शब्द बोलेगा, तो उसका सेवक चंगा हो जाएगा। सूबेदार ने अपने आत्मविश्वास को समझाया: "क्योंकि मैं भी अधिकार के अधीन स्थापित व्यक्ति हूं..." (लूका 7:7,8 केजेवी)। वह प्रत्यायोजित अधिकार में निहित शक्ति को समझता था। जब तक वह अपने अगुवों के अधीन था, तब तक उसके द्वारा कही गई हर आज्ञा में रोमन सम्राट का अधिकार था। उसकी अवज्ञा करना सम्राट को नीचा दिखाना था। सूबेदार का अधिकार महान था जिसके कारण वह प्रतिनिधित्व करता था। सूबेदार ने मसीह में इसी सिद्धांत को पहचाना। चूंकि उसने परमेश्वर का प्रतिनिधित्व किया, और पिता की इच्छा के प्रति पूरी तरह से अधीन था, इसलिए यीशु द्वारा बोले गए प्रत्येक शब्द को परमेश्वर के अधिकार के साथ निवेश किया गया था (इफिसियों 1:20-23)। सूबेदार की स्वीकारोक्ति, "मैं भी अधिकार के तहत स्थापित एक व्यक्ति हूं," सभी सच्चे अधिकार के लिए शास्त्रों के आधार को समाहित करता है: एक व्यक्ति जो समर्पण में नहीं है उसे अधिकार का प्रयोग करने का कोई अधिकार नहीं है। एक दिन मैंने लॉस एंजिल्स शहर में एक बड़े पैमाने पर ट्रैफिक जाम देखा। एक आदमी एक व्यस्त चौराहे के बीच में खड़ा था, पहले एक दिशा से, फिर दूसरी दिशा से। अंत में, उसने चारों दिशाओं से आने वाले यातायात को रोक दिया। मोटर चालक गुस्से में थे। दर्शक चिल्ला रहे थे। मुझे नहीं पता था कि इसका क्या मतलब निकाला जाए। वह आदमी सक्षम लग रहा था। वह अच्छी तरह से कपड़े पहने हुए था, साफ मुंडा था और जाहिरा तौर पर उसके कारण होने वाले हंगामा से थोड़ा भी परेशान नहीं था। लेकिन मैं उसके इरादों का पता नहीं लगा सका। कोई आग नहीं लगी, कोई दुर्घटना नहीं, कोई चोट नहीं। जब पुलिस पहुंची और उस आदमी को अंकुश तक ले गई, तो भीड़ ने मजाक उड़ाया और चिल्लाया, "उसे नटहाउस में फेंक दो! उसे मनोचिकित्सक के पास ले जाओ!" उन्होंने उस व्यक्ति पर निर्णय पारित किया था और उसे एक संस्था के लिए सौंपने के लिए तैयार थे क्योंकि उसने स्पष्ट रूप से एक ऐसे अधिकार का प्रयोग किया था जो उसका नहीं था। वह एक पुलिसकर्मी या फायरमैन नहीं था। वह केवल एक नागरिक था - अपने संपर्क लेंस को खोजने की कोशिश कर रहा था! भीड़ ने निष्कर्ष निकाला कि जो कोई भी अधिकार के अधीन हुए बिना अधिकार का प्रयोग करेगा, वह पागल होना चाहिए। एक ईसाई के पास कोई अधिकार नहीं है जब तक कि वह मसीह से न आता है। और चूंकि मसीह प्रत्यायोजित अधिकार के माध्यम से शासन करता है, जब हम उन लोगों के अधीन होने से इनकार करते हैं जो हमारे ऊपर अधिकार रखते हैं, तो हम अपना अधिकार खो देते हैं। हमें इसका एक उदाहरण मिलता है जब यूहन्ना ने गयुस को दियुत्रिफस की आज्ञा का पालन न करने का निर्देश दिया था, क्योंकि दियुत्रिफस ने यूहन्ना की आज्ञा का पालन नहीं किया था (3 यूहन्ना 9-11)। हमारे ऊपर अधिकार रखने वालों के अधीन रहने की अनिच्छा गंभीर परिणामों के साथ एक बड़ा पाप है। पौलुस लिखता है, "और यदि कोई इस पत्र में हमारे निर्देश का पालन नहीं करता है, तो उस मनुष्य पर विशेष ध्यान देना और उसके साथ संगति न करना, ताकि वह लज्जित हो। तौभी उसे शत्रु न समझो, परन्तु उसे भाई समझो" (2 थिस्सलुनीकियों 3:14,15)। एक विश्वासी जो अपने ऊपर अधिकार रखने वालों के अधीन होने से इनकार करता है, वह एक भगोड़े बच्चे के समान है। वह अपनी रक्षा करने की कोशिश करेगा, लेकिन वयस्क पर्यवेक्षण के बिना उसका अस्तित्व गंभीर खतरे में है। जो खुद को एक आध्यात्मिक अभिभावक की सुरक्षात्मक हिरासत से वंचित करता है, वह अपने पोषण के लिए परमेश्वर के प्रावधान को अस्वीकार कर देता है और एक कमजोर भविष्य का सामना करता है। भरोसा एक शिष्य की ताकत है (यशायाह 30:15)। जब मैंने वाट्स में सेवा करना शुरू किया, तो मैं किसी के अधीन नहीं था। जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि धर्मी मनुष्यों के अधिकार के अधीन होने के बिना, मेरे पास कोई अधिकार नहीं था। यह मेरे लिए बुरा था, लेकिन उन लोगों के लिए भी बुरा था जिनकी मैंने सेवा की थी। मैंने

पुरुषों के एक समूह के लिए लगन से प्रार्थना की, जिनके अधीन मैं कर सकता था, क्योंकि "सलाहकारों की भीड़ में सुरक्षा है" (नीतिवचन 11:14)। और मैं जानता था कि परमेश्वर ने प्रारंभिक चर्च के अगुवों से सामूहिक रूप से बात की थी (प्रेरितों के काम 15:28)। पहला यूहन्ना 4:1 कहता है कि समर्पण करने से पहले "आत्माओं की परीक्षा लें"। यह ईश्वरीय लोगों के नेतृत्व की तलाश करने का आदेश है। मैंने माना कि इन लोगों को परमेश्वर के अधिकार को प्राप्त करने के लिए बाइबल की कुछ आवश्यकताओं को पूरा करना था। व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उन्हें अपने पूर्ण अधिकार के रूप में परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पण करने की आवश्यकता थी (1 तीमुथियुस 6:3-5; 2 तीमुथियुस 3:16,17)। उन्हें दूसरों की सेवा करके अपनी ईसाई प्रतिबद्धता (2 कुरिन्थियों 8:22) और सभी चीजों में विश्वासयोग्य होने के द्वारा साबित करने की आवश्यकता थी, जैसे कि उनके पैसे की भण्डारीपन (लूका 16:10-12)। संक्षेप में, उन्हें अपने विश्वास को जीना था, एक ऐसा मॉडल प्रदान करना था जिसका मैं अनुकरण कर सकता था (3 यूहन्ना 11)। और प्रभु ने ईमानदारी से इन लोगों को प्रदान किया। वे विश्व प्रभाव के कार्यकारी बोर्ड बन गए। एक बार जब मैंने परमेश्वर के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की पुष्टि कर ली, तो मुझे पता था कि मैं उनके माध्यम से परमेश्वर की अगुवाई पर भरोसा कर सकती हूँ ताकि वह मेरा सक्रिय रूप से मार्गदर्शन कर सके और मुझे चेतावनी दे सके।

पीपी.51-54

***चरण 6**: व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करें फिर प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अनुरोधों के लिए प्रार्थना करता है।*

मूल: एक शिष्य का निर्माण डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981 पब। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। नीचे दी गई सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261011